विशद
चौंसठ ऋद्धि विधान

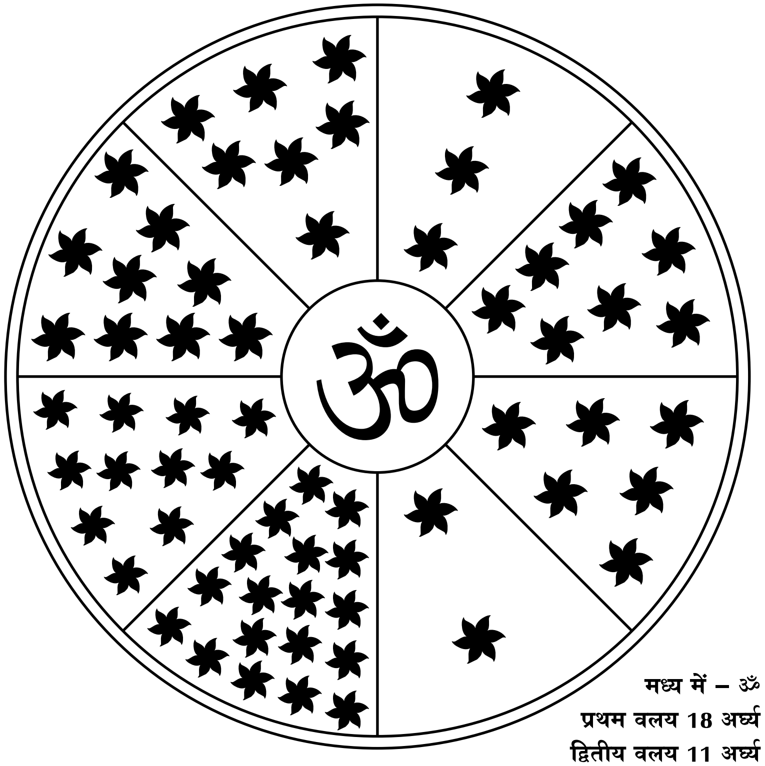

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय 18 अर्घ्य
द्वितीय वलय 11 अर्घ्य
तृतीय वलय 9 अर्घ्य
चतुर्थ वलय 7 अर्घ्य
पंचम वलय 3 अर्घ्य
षष्ठ वलय 8 अर्घ्य
सप्तम वलय 6 अर्घ्य
अष्टम वलय 2 अर्घ्य
कुल 64 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति : **विशद चौंसठ ऋद्धि विधान**

कृतिकार : **प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी

क्षु. श्री विसोमसागर जी महाराज, क्षु. श्री वात्सल्य भारती माताजी

संपादन : ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660998425

संयोजन : ब्र. सपना दीदी 9829127533, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : प्रथम 2017 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 21/- (पुन: प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : 1. **विशद साहित्य केन्द्र**

श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी

रेवाड़ी (हरियाणा), मो.: 9812502062, 9416888879

2. **हरीश जैन**

जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली,

नियर लाल बत्ती चौक

गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971

3. **सुरेश सेठी**

पी-958 शांतिनगर रोड़ नं. 3,

दुर्गापुरा जयपुर (राज.) 9413336017

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री पवन कुमार जैन (एस.बी.आई.) एवं श्रीमती शशि जैन

249/4, जवाहर नगर, गुरुग्राम (हरियाणा)

शादी के 46 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651 9811363613, E-mail : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

चौंसठ मंत्र की अपेक्षा चौंसठ व्रत करना चाहिए। व्रत के दिन उपवास उत्तम, अल्पाहार फल, दूध, मेवा या जल आदि लेना मध्यम और एक बार शुद्ध भोजन करना जघन्य विधि है। प्रत्येक माह में अष्टमी,चतुर्दशी आदि किसी भी दिन व्रत कर सकते हैं। व्रत पूर्ण कर **'चौंसठ ऋद्धि मंडल'** विधान करके शक्ति के अनुसार चौंसठ शास्त्र, उपकरण चाहिए आदि मंदिर जी रखें। अनेक प्रकार की ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करना, अनेक प्रकार के रोग, शोक, दु:ख दारिद्रय से छुटकारा पाना यह इसका फल है

प्रत्येक व्रत का समुच्चय मंत्र-ॐ ह्रीं चतु: षष्ठी ऋद्धिभ्यो नम:

चौंसठ ऋद्धि सम्बंधि 64 व्रतों के चौंसठ मंत्र

बुद्धि ऋद्धि के 18 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अवधिज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
2. ॐ ह्रीं मन: पर्ययज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
3. ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धिऋद्धये नम:।
4. ॐ ह्रीं बीज बुद्धिऋद्धये नम:।
5. ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नम:।
6. ॐ ह्रीं पदारनुसारिणी बुद्धिऋद्धये नम:।
7. ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
8. ॐ ह्रीं दूरास्त्वादित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
9. ॐ ह्रीं दूरस्पर्शनत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
10. ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
11. ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नम:।
12. ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
13. ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नम:।
14. ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नम:।

15. ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः।
16. ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः।
17. ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः।
18. ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।

विक्रिया ऋद्धि के 11 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अणिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं महिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं लघिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं गरिमाविक्रिया ऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रिया ऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रिया ऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं वशित्वविक्रिया ऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रिया ऋद्धये नमः।
10. ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रिया ऋद्धये नमः।
11. ॐ ह्रीं कामरूपणीविक्रिया ऋद्धये नमः।

चारण ऋद्धि के 9 मंत्र -

1. ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः।
9. ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः।

तपऋद्धि के 7 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं उग्रतपऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दीप्ततपऋद्धये नमः।

3. ॐ ह्रीं तप्ततपऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं महातपऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं घोरतपऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्व ऋद्धये नमः।

बलऋद्धि के 3 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं वचनबल ऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धये नमः।

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आमशौंषधिऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मलौषधिषधिऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं विप्रुषौषिधिऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सवौषधिऋद्धये नमः।
7. ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः।
8. ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये नमः।

रसऋद्धि के 6 मंत्र-

1. ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः।
3. ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः।
4. ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः।
5. ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः।
6. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

अक्षीणऋद्धि के मंत्र-

1. ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः।
2. ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

॥ ज्ञानोदय छन्द॥

चौंसठ ऋद्धी का व्रत करने , से हो ऋद्धी सिद्धि महान्।
पाते हें सौभाग्य श्रेष्ठ नर, करते हैं आतम कल्याण॥
सांसारिक सारे सुख पाते, ऋद्धी व्रत धारी गुणवान।
मोक्ष महल के राही बनकर, बन जाते हैं नर भगवान॥1॥
एकम चौथ अमावश नौमी, छोड़ किसी भी तिथियों में।
श्रेष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में, हीनाधिक न मितियों में॥
पंच कल्याणक की तिथियों में, व्रत प्रारंभ करें भाई।
ज्ञान ध्यान प्रभु भक्ती करके, समय बितावें सुखदायी॥2॥
करें एक उपवास पारणा, एकाशन भावों के साथ।
चौंसठ व्रत करके उद्यापन, करो पूर्ण फिर जोड़ो हाथ॥
मध्यम विधि में चौंसठ अनसन, करें स्वयं इच्छा अनुसार।
जघन्य सुविधि में एकाशन कर, करें पूर्ण व्रतविधि अनुसार॥3॥
ऊनोदर से व्रत का पालन, या करना इसका परित्याग।
यह भी शक्ती न हो तो फिर, श्रद्धा रखना अरु अनुराग॥
विधि विधान औ भावों का फल, भिन्न-भिन्न मिलता भाई
त्याग तपस्या धर्म साधना, शक्ति भक्ति हो सुखदायी॥4॥

।उद्यापन विधि॥

व्रत पूरा करके उद्यापन, करें भाव से विधि अनुसार।
पूजा अर्चा जाप हवन कर, करें वन्दना बारम्बार॥
दान करें उपकरण सु चौंसठ, आहारादिक चार प्रकार।
श्रेष्ठ महोत्सव पूर्वक करने, से हो भव्यों का उद्धार॥1॥
उद्यापन जो न कर पावें, यह व्रत दूने करें विशेष।
श्रद्धा पूर्वक चरण शरण प्रभु, भक्ती करें यही उपदेश॥
अथवा अपनी शक्ती पूर्वक, करें अल्प से अल्प सुदान।
छोड़ कृपणता प्रभु की भक्ती, हो उद्धार करना श्रद्धान॥2॥

व्रत कथा

व्यन्तर ने उपसर्ग किया तब, महामारी फैली चहुँ ओर।
त्रस्त हुई जनता जब सारी, औषधि का भी चला न जोर॥
मन्वादिक ऋषिवर तब आये, हुआ पवन का शुभ स्पर्श।
रोग मिटा लोगों का क्षण में, लोगों ने पाया तब हर्ष॥1॥2॥
हार मानकर व्यन्तर भागे, मथुरा नगरी हुई निहाल।
मुनियों का तब वन्दन करते, आके प्राणी सभी त्रिकाल॥
मुनियों से स्पर्शित वायू, से होते जब रोग विनाश।
फिर उनकी पूजा अर्चा से, क्यों ना होगी पूरी आस॥
शुभ भावों से द्रव्य हाथ ले, पूजा कर जो करें विधान॥
सुख शांती सौभाग्य बढ़े फिर, प्राणी पावें निज कल्याण।
यही भावना भाते हैं हम, सुख-शांती का होय प्रसार।
मिट जाये बाधाएँ सारी, होय लोक में मंगलकार॥ 3॥

दोहा- पच्चीस सौ तियालीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
श्रावण कृष्णा त्रयोदशी, गुरूग्राम स्थान॥
चौंसठ ऋद्धी यह शुभम, लिक्खा श्रेष्ठ विधान।
विशद भाव से यहाँ किया, ऋद्धी का गुणगान॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

हस्त शुद्धि

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्तप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

सर्वांग शुद्धि

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोदभवे अमृत वर्षिण अमृतं स्रावय-2 सं सं क्लीं-क्लीं ब्लूं-ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें।)

पूजा हेतू सब पात्रों की, करते हैं हम जल से शुद्धि।
यथाम्नाये नाम करें समाहित, सकलीकरण से होय विशुद्धि॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः नमोऽर्हते श्री मते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धि करोमि।

लघु विनय पाठ-1

दोहा

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ॥1॥
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान॥2॥
पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार॥3॥
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र॥4॥
भवि जन को भव-सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार॥5॥
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश॥6॥
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग॥7॥
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार॥8॥

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत॥9॥
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार॥10॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत॥

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ!॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥2॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥3॥

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥4॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा॥5॥

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ मैं भी गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयाँस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक .... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहाँधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा- **पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांती सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से पावें निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है। पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण॥2॥
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष॥3॥
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिन आगम जग उपकारी॥4॥
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन॥
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश॥5॥
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैरागय जगाता है॥
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं॥6॥
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है॥
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा॥7॥
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान॥
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान॥8॥
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याय भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप॥
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान॥9॥

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ! हम, चरण झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

चौंसठ ऋद्धि विधान पूजा

स्थापना

यह संसार असार कहा है, इसमें नहीं है कुछ भी सार।
स्वजन और परिजन धन धरती, त्याग बनें साधू अनगार॥
उत्तम संयम तप के द्वारा, पाएँ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ संत।
रत्नत्रय के धारी पावन, ऋषिवर होतें हैं गुणवन्त॥

दोहा- तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, ऋद्धीधार ऋषीश।
आह्वानन करते विशद, चरण झुकाते शीश॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरः! अत्र अवतर अवतर संवौषठ आह्वाननं! अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं! अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

// चाल छन्द//

हमने जल बहुत पिया है, ना समरस पान किया है।
अब नीर चढ़ाने लाए, त्रय रोग नशाने आए॥1॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का लेप कराए, ना निज में चित्त लगाए।
चन्दन यह चरण चढ़ाएँ, शीतल स्वभाव को ध्याएँ॥2॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय स्वभाव ना पाए, पर पद में ही भटकाए।
अब अक्षय पदवी पाएँ, अक्षत ये धवल चढ़ाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भव सन्तति सतत बढ़ाई, ना शील सम्पदा पाई।
सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनशाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो कामवाणबिध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा आहार दुखदायी, जो क्षुधा सताए भाई।
अब क्षुधा रोग विनशाएँ, ताजे चरु यहाँ चढ़ाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह का घोर अंधेरा, कब होगा ज्ञान सबेरा।
निज का पुरुषार्थ जगाएँ, अब ज्ञान का दीप जलाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको वसु कर्म सताते, निज गुण का घात कराते।
कर्मों की धूप जलाएँ, शाश्वत निज गुण प्रगटाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों का फल पाए, ना आतम रस चख पाए।
अब उत्तम फल ये लाए, शिव फल की आस जगाए॥8॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफल पदप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार बढ़ाया, ना विशद मार्ग अपनाया।
निज आत्म शक्ति प्रगटाएँ, शाश्वत अनर्घ्य पद पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद पदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ! आपके द्वार पर, पूरी होती आस।
शांती धारा दे रहे, पाने शिवपुर वास॥

॥ शान्तये शांति धारा ....॥

दोहा- अर्चा कर प्रभु आपकी, हुआ जगत उद्धार।
पुष्पांजलिं करते विशद, पाने भवदधि पार॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

जयमाला

दोहा- मंगलमय मंगल परम, मंगलमयी त्रिकाल।
चौंसठ हैं शुभ ऋद्धियाँ, गाते हैं जयमाल॥

॥ शम्भू छन्द॥

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करनेसे एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं॥
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन संत ही धरते हैं॥1॥
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली बड़ी विशेष कही।
ऋद्धी सबका हित करती है, मंगलमय जो श्रेष्ठ रही॥
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जनको सुख देने वाली, ऋद्धी मैटे भव का रोग॥2॥
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश॥
श्रेष्ठ ऋद्धि की शक्ती पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिनका ध्यान सभी॥3॥
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में, सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं॥
बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा॥4॥
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।

ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें॥
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ॥5॥

दोहा- पूज्य हैं तीनों लोक में, ऋषिवर ऋद्धीवान।
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हैं गुणगान॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् तप से जीव यह, पाए ऋद्धि प्रधान।
जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान॥

॥ इत्याशीर्वाद:पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

मन्वादि सप्त ऋषियों के अर्घ्य

मन्व और स्वरमन्व मुनीश्वर, श्री निचय अरु सर्व सुन्दर।
श्री जयवान विनय लालस मुनि,जय मित्राख्य श्रेष्ठ ऋषिवर।
सातों चारण ऋद्धिधारी, का हम करते हैं गुणगान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मन्वादि सप्त ऋषिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा तपऋद्धिये नमः।

प्रथमकोष्ठ

दोहा- "बुद्धि ऋद्धि" गाई विशद, भेद अठारह वान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने को गुणगान॥

॥अथ प्रथम कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अष्टादश बुद्धि ऋद्धि के अर्घ्य

(अडिल्य छन्द)

**कर्म घातिया अपने पूर्ण नशाए हैं, 'केवल बुद्धि ऋद्धि' जिनवर प्रगटाए हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥1॥**

ॐ ह्रीं केवलज्ञान बुद्धि ऋद्धि धारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप कर 'ज्ञान मनः पर्यय' जिन पाए हैं, आप महा ऋद्धीधारी कहलाए हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥2॥
ॐ ह्रीं मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अवधि ऋद्धि धारी जग में जिन संत हैं, कर्म नाश कर होते जो अरहंत हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥3॥
ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

एक बीज पद सुन सब ग्रन्थ प्रकाशते, बीज बुद्धि ऋद्धीधर जग में शासते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥4॥
ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भिन्न भिन्न तत्त्वों का ज्ञान बखानते, 'कोष्ठ बुद्धि' ऋद्धीधर सब कुछ जानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥5॥
ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आदि मध्य या अन्तिम पद सुन जानते, 'पदानुसारिणी' ऋद्धीधर सार बखानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥6॥
ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सेना के जीवों की ध्वनि पहिचानते, 'संभिन्न सोतृत्त्व ऋद्धि धारी सब जानते।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥7॥
ॐ ह्रीं संभिन्न सोतृत्व बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूरास्वादन' ऋद्धिधर मुनि जानिए, कई योजन का लें आस्वादन मानिए।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥8॥
ॐ ह्रीं दूरास्वादन बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कई योजन से दूर की वस्तु छू रहे, 'दूर स्पर्शन' ऋद्धीधर जिन मुनि कहे।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥9॥
ॐ ह्रीं दूर स्पर्शन ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूरावलोकन' बुद्धि ऋद्धिधर जानिए, कई योजन तक दूर की देखें मानिए।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥10॥
ॐ ह्रीं दूरावलोकन बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दूर घ्राणत्व' की शक्ति जिन मुनि पाए हैं, ऐसे मुनिवर जग में पूज्य कहाए हैं।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥11॥
ॐ ह्रीं दूर घ्राणत्व बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'दूर श्रवण' की शक्ति पाते मुनि अहा, तप की शक्ति का फल यह अनुपम रहा।
हे जिनवर चरणों में पूरी आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥12॥
ॐ ह्रीं दूर श्रवण बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'दश पूर्वित्व' बुद्धि ऋद्धी धारी सभी, विद्यायें पा विचलित ना होते कभी।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥13॥
ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'पूर्व चतुर्दश' ऋद्धीधर मुनि जानिए, श्रुतज्ञान सब जानें यह पहचानिए।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥14॥
ॐ ह्रीं पूर्व चतुर्दश बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
अंतरिक्ष आदिक निमित्त से जानते, 'अष्टांग निमित्त' धारी मुनिवर पहचानते।
हे जिनवर चरणों में पूर्ण आश हो, मम अन्तर से सम्यक् ज्ञान प्रकाश हो॥15॥
ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'प्रज्ञा श्रमण' बुद्धि ऋद्धी मुनि पाए हैं, द्वादशांग का ज्ञान मुनी प्रगटाए हैं।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥16॥
ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
'प्रत्येक बुद्धि' ऋद्धी धारी मुनि जानिए, बिना पढ़े उपदेश करें पहचानिए।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥17॥
ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।
मुनि 'वादित्व ऋद्धि' धारी कहलाए हैं, वाद कुशल को क्षण में आप हराए हैं।
श्री जिनवर की पूजा करते भाव से, हम भी अर्चा करने आए चाव से॥18॥
ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

बुद्धि ऋद्धि के, भेद अठारह गाए हैं।
सम्यक् तप कर, ऋषिवर जो प्रगटाए हैं॥
श्री जिनवर की पूजा, करते भाव से,
हम भी अर्चा करने, आए चाव से।

ॐ ह्रीं अष्टादशभेद युक्त बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय कोष्ठ

दोहा- ऋद्धि विक्रिया के विशद, ग्यारह भेद प्रधान।
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने को गुणगान॥

द्वितियकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

एकादश विक्रिया ऋद्धि के अर्घ्य

अणु समान काया हो, जावे भाई रे!
कमल तन्तु पर निराबाध, तिष्ठाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥1॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख योजन तन की ऊँचाई भाई रे!
नरपति का वैभव उपजावे भाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥2॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया विशाल मुनि जन-जन को दिखलाई रे!
अर्क तूल सम हल्का तन हो भाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥3॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया सूक्ष्म मुनि सब जन को दिखलाई रे!
इन्द्रादिक के द्वारा न हिल पाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥4॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चन्द्र ग्रह मेरुगिरि सुन भाई रे!
भू पर रह स्पर्श करें मुनि भाई रे!

श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥5॥

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि रूप बनाते मुनिवर भाई रे!
पृथ्वी में जल वत् धस जावें भाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥6॥

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता मुनिवर पाई रे!
इन्द्रादिक सब शीश झुकाते भाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥7॥

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके वल्लभ गुण के दाता भाई रे!
तीन लोक दर्शन करके वश हो जाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥8॥

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत माहिं निकस जावें मुनि भाई रे!
रूकें नहीं काहू से मुनिवर भाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥9॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सबके देखत प्रच्छन्न होवें भाई रे!
मुनि को जाते कोई देख न पाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!॥10॥

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन वांछित बहु रूप बनावें भाई रे!
कामरूपिणी विद्या मुनिवर पाई रे!
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ मुनिवर पावें, भाई रे!
मोक्ष मार्ग के राही हों, मुनि भाई रे!।।11।।

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि विक्रिया जानो पावन भाई रे।
सम्यक् तप कर प्राप्त करें, मुनि भाई रे!।।
विघ्न विनाशक ऋषिवर गाए भाई रे!।।
ग्यारह भेद बताए, अतिशय भाई रे!।।12।।

ॐ ह्रीं एकादश भेद युक्त विक्रिया ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय कोष्ठ

दोहा- "चारण ऋद्धी' के विशद, भेद कहे नौ खास।
पुष्पांजलि करते यहाँ, होवे पूरी आस।।

।।तृतीय कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

नवचारण ऋद्धि के अर्घ्य

।।चौपाई।।

'जंघाचारण ऋद्धी' धारी, गगन गमन करते अविकारी।
भू से ऊपर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।1।।

ॐ ह्रीं जंघाचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'जल चारण ऋद्धी' धर भाई, जल पर गमन करें सुखदायी।
जल के ऊपर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।2।।

ॐ ह्रीं जलचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'श्रेणी चारण ऋद्धि' धारे, नभ पंक्ति के चलें सहारे।
नभ श्रेणी पर चलने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।3।।

ॐ ह्रीं श्रेणी चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पत्र चारण ऋद्धि' मुनि पाते, पत्तों पर जो चलते जाते।
ऋद्धि यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।4।।

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अग्नी चारण' ऋद्धीधारी, चले अग्नि पर हो अविकारी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घ्यं नि. स्वाहा।

'फल चारण' ऋद्धीधर ज्ञानी, चलें फलों पर मुनि विज्ञानी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।6।।

ॐ ह्रीं फल चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'तन्तू चारण' ऋद्धी पाते, तन्तु पर मुनि चलते जाते।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।7।।

ॐ ह्रीं तन्तु चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पुष्प चारण' ऋद्धीधर गाये, गमन पुष्प पर करते पाये।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फल चारण ऋद्धीधर स्वामी, फलों पर चलते अन्तर्यामी।
ऋद्धी यह शुभ पाने वाले, ऋद्धीधर मुनि रहे निराले।।9।।

ॐ ह्रीं फल चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चारण ऋद्धी अतिशय जानो, भेद ऋद्धि के नौ शुभ मानो।।
ऋद्धि से ऊपर चलने वाले, ऋद्धी धर मुनि रहे निराले।।10।।

ॐ ह्रीं नौ भेद युक्त चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा- सप्त भेद "तप ऋद्धि" के, गाए मंगलकार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।

।। चतुर्थकोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सप्त तप ऋद्धि के अर्घ्य

।।चाल छन्द।।

क्रमशः उपवास बढ़ावें, तप उग्र ऋद्धि मुनि पावें।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि दीप्त ऋद्धि शुभ पावें, तप करके दीप्ति बढ़ावें।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।2।।
ॐ ह्रीं दीप्त तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि तप्त ऋद्धि प्रगटाते, किन्तु निहार ना जाते।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।3।।
ॐ ह्रीं तप्त तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि ऋद्धि महातप पाते, आतम का ज्ञान जगाते।
हैं तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।4।।
ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप घोर ऋद्धि के धारी, निज ध्यान लीन अनगारी।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।5।।
ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि घोर पराक्रम ऋद्धी, धारें हो सर्व प्रसिद्धी।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।6।।
ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि अघोर ब्रह्मचर्य धारें, सब भीषण रोग निवारें।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।7।।
ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तप सप्त ऋद्धियाँ भाई, मुनिवर पावें शिव दाई।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।8।।
ॐ ह्रीं सप्त भेद युक्त उग्र तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

दोहा- तीन भेद बल ऋद्धि के, गाये महति महान।
पुष्पांजलि कर के यहाँ, करते हैं गुणगान।।

पंचमकोष्ठोपरिपुष्पांजलि क्षिपेत्

त्रय बल ऋद्धि के अर्घ्य

।। सखी छन्द।।

मन बल ऋद्धी प्रगटाएँ, मुनि द्वादशांग श्रुत पाएँ।
मुनि बल ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।1।
ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल वचन ऋद्धि जो पाएँ, वह द्वादशांग श्रुत गाएँ।
मुनि बल ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।2।।
ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल काय ऋद्धीधर ज्ञानी, अविचल होते निज ध्यानी।
मुनि तप ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।3।।
ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल त्रय ऋद्धी शुभकारी, मुनिवर पावें अनगारी।।
मुनि बल ऋद्धी के धारी, जिनके पद ढोक हमारी।।4।।
ॐ ह्रीं त्रय भेदयुक्त बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

षष्ठम् कोष्ठ

दोहा- "औषधि ऋद्धी" के कहे, आठ भेद शुभकार।
पुष्पांजलि कर पूजते, अतिशय बारम्बार।।

।।षष्ठम कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्ट औषधि ऋद्धि के अर्घ्य

।। अवतार छन्द।।

शुभ आमर्षौषधि ऋद्धी, सबका कष्ट हरे,
पद रज करके स्पर्श, सबको स्वस्थ करे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।1।।
ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल्लौषधि ऋद्धीवान, का तन स्वेद लगे,
तत्क्षण व्याधी या रोग, सारा दूर भगे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धीवान, का तन थूक लगे,
हो तन में रोग असाध्य, क्षण में दूर भगे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मल्लौषधि ऋद्धीवान, का मल व्याधि हरे,
मल कान दांत का रोग, सबका पूर्ण हरे।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्योअर्घ्यं नि. स्वाहा।

है ऋद्धि विडौषधि श्रेष्ठ, जग जन दुखहारी,
मलमूत्र वीर्य विष्टादि, रोग के परिहारी।।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धी श्रेष्ठ, सबका हित करती।
तन से स्पर्शित वायु, सबका दुख हरती।।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आशीर्विष ऋद्धी पाय, विष अमृत करते।
विष की बाधा मुनिराज, करुणाकर हरते।

औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दृष्टीनिर्विष ऋषिराज, पथ अवलोकन करते।
विष सर्पादि का आप, क्षण भर में हरते।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दृष्टीनिर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ऋषि औषध ऋद्धीवान, जगमंगलकारी।
करते आरोग्य प्रदान, जग जन हितकारी।।
औषधि ऋद्धी को धार, शिव पद पाते हैं,
उनके चरणों धर माथ, हम सिरनाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट भेद युक्त औषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम कोष्ठ

दोहा- रस "ऋद्धी" के भेद छह, गाए वीर जिनेश।
पुष्पांजलि करते विशद, अर्चा हेतू विशेष।।

।।सप्तम कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

षट रस ऋद्धि के अर्घ्य

।।हरिगीताछन्द।।

क्षीरस्रावि ऋद्धीधारी मुनि, लेते हैं नीरस आहार।
क्षीर समान सरस हो जाता, ऋद्धी का पाके आधार।।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मधुस्रावि ऋद्धीधारी मुनि, ग्रहण करे जो भी आहार।
मधु सम मिष्ठ स्वादु हो जाता, है शुभ ऋद्धी के आधार।

हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।2॥
ॐ ह्रीं मधुस्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्पिस्रावि रस ऋद्धी धारी, भोजन लेते सर्पिविहीन।
घृत सम स्वादुमिष्ट हो जावे, सर्पि ऋद्धिधर रहें प्रवीण।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।3॥
ॐ ह्रीं सर्पिस्रावि रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अमृतस्रावी ऋद्धीधारी, विष मिश्रित भी लें आहार।
अमृत सम हो जावे तत्क्षण, विशद ऋद्धि का ले आधार॥
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।4॥
ॐ ह्रीं अमृतस्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आशीर्विष रस ऋद्धी धारी, क्रोध से कह दें यदि वचन।
तो उस प्राणी का हो जाए, उसी समय तत्काल मरण॥
कभी किसी को ऐसी वाणी, मुनिवर नहीं सुनाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।5॥
ॐ ह्रीं आर्शीविष ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दृष्टीविष रस ऋद्धी धारी, देखें क्रोध दृष्टि के साथ।
तत्क्षण वहीं गिरे मर जावे, लगा सके न कोई हाथ॥
कभी किसी को ऐसी दृष्टी, मुनिवर नहीं दिखाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।6॥
ॐ ह्रीं दृष्टीविष ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रस ऋद्धी के भेद रहे छह, पाते जो मुनिवर अनगार।
सरस होय नीरस भोजन भी, ऋद्धी द्वारा मंगलकार॥
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बना प्रभु, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।7॥
ॐ ह्रीं षट् भेद युक्त रसऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्टम कोष्ठ

दोहा- भेद "ऋद्धि अक्षीण" के, दो गाए शुभकार।
पुष्पांजलि करते विशद, पावन अतिशयकार॥

।।अष्टम कोष्ठोपरिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

द्वय अक्षीण ऋद्धि के अर्घ्य

।। अवतार छन्द।।

ऋद्धी क्षेत्र अक्षीण महानस, पाने वाले मुनि अनगार।
सेना जीमे चक्रवर्ति की, श्रेष्ठ ऋद्धिधर के आधार।
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।1॥
ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अक्षीण महालय ऋद्धीधारी, भूमी चार हाथ शुभ पाय।
चक्रवर्ति का सेन्य वहाँ पर, ऋद्धि के आधार समाय॥
हम ऋद्धी धारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।2॥
ॐ ह्रीं अक्षीण महालय ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दो भेद विशद अतिशय जानो, अक्षीण ऋद्धि है शुभकारी।
हैं निस्पृह वृत्ती धर योगी, यह ऋद्धी पावें अनगारी॥
हम ऋद्धीधारी मुनिवर के, चरणों में शीश झुकाते हैं।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाते हैं।3॥
ॐ ह्रीं द्वयभेद युक्त अक्षीण ऋद्धिधारक सर्व ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिश्वरेभ्यो नमः

समुच्चय जयमाला

दोहा- चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाए।
धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय॥

।।चौपाई।।

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।
मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा।।1।।
पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।
मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी।2
चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।
बुद्धि ऋद्धि धारे मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई।।3
विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।
चारण मुनि को पूजें भाई, भव- भव के आताप नशाई।4
चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।
तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें।।5
कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।
बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी।6
जय जय औषध ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारे गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें।।7
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें।
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें।।8
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव भव के सब पाप नशावें।
न मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ।।9
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी।।10
पूजा करके जिनगुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
'विशद' ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ।।11

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।
तिनको पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि ऋद्धि धारक मुनीभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर ऋषी, संयम तप के ईश।
उनके गुण पाने विशद,चरण झुकाते शीश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।

एक सौ सत्तर तीर्थंकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश।।
क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश।।

ॐ ह्रीं ढ़ाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम्परागत आचार्यों का सामूहिक अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरु श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर, गुरु भरत सिन्धु पद पूजें आज।।
गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, 'विशद' करें चरणों अर्चन।
पूज्य सर्व आचार्यों के पद, मेरा बारम्बार नमन।।

ॐ ह्रूं गुरु परम्पराचार्य सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विशद सागर जी का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाये है।
महाव्रतों को धारणकर ले, मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें, गुरुचरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ ह्रूं चौंसठ ऋद्धी विधान के रचयिता प. पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा- अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण

क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिनाथ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे॥
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ॥
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी॥
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी॥
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि॥

ॐ शांति-शांति-शांति

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान॥
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन॥
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरें आशिका शीश।
'विशद' कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष॥

सप्त ऋषि समुच्चय पूजा

स्थापना

सुरमन्यु श्री मन्यु निचय अरु, रहे सर्वसुन्दर ऋषिराज।
श्री जयवान विनय लालस मुनि, श्री जय मित्र सप्त मुनिराज॥
ऋद्धि सिद्धि समृद्धी पाने, करते हम ऋषि का गुणगान।
आह्वानन् करते निज उर में, प्राप्त करें हम पद निर्वाण॥

दोहा- सप्त ऋषी जग को दिए, सप्त तत्त्व का ज्ञान।
चरणों में वंदन विशद, करो मेरा कल्याण॥

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशक चौरारि डाकिनी-शाकिनी-व्यन्तर भूतादि-पराभव-निवारक श्री सप्तऋद्धियुक्त सप्त ऋषिराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्! ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशक चौरारि डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारक श्री सप्तऋद्धियुक्त सप्त ऋषिराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव-विनाशक चौरारि डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारक श्री सप्तऋद्धियुक्त सप्त ऋषिराज! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज : (वन्दे जिनवरम्)

हम सब मिलकर करें अर्चना, सप्तऋषी गुणवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥
प्रासुक नीर कलश में भरकर, हम पूजा को लाए हैं।
जन्म जरा से मुक्ती पाने, आज शरण में आए हैं॥
भव से मुक्ति दिलाने वाली, पूजा संत महान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥1॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि का सुरभित चन्दन, हमने यहाँ घिसाया है।
भव सन्ताप नशाने का शुभ, भाव हृदय में आया है॥

भव सन्ताप नशाने वाली, अर्चा संत महान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥2॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय पद पाने के हमने, मन में भाव जगाये हैं।
अतः धवल अक्षय ये अक्षत, आज चढ़ाने लाए हैं॥
अक्षत सुपद दिलाने वाली, पूजा संत महान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥3॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग से मारे-मारे, भव सागर में भटक रहे।
कर्मों के बन्धन से चारों, गतियों में हम अटक रहे॥
सप्त ऋषी की पूजा पावन, आतम के उत्थान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥4॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी क्षुधा रोग के, द्वारा बहुत सताए हैं।
व्यंजन सरस चढ़ाकर हम वह, रोग नशाने आए हैं॥
क्षुधा रोग को हरने वाली, पूजा संत महान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥5॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम में फँसने से, सम्यक् पथ ना पाया है।
सम्यक ज्ञान प्रकाशित करने, दीपक विशद जलाया है॥
खुशबू महके इस जीवन में, अब सम्यक् श्रद्धान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥6॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की ज्वाला जलती, जिसमें प्राणी झुलस रहे।
भव्य जीव जिन पूजा करके, मोहजाल में सुलझ रहे॥
धूप से पूजा करने आये, आतम के उत्थान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥7॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ना परम विशुद्ध भावना, अब तक कभी बनाए हैं।
कर्मों के फल पाए हमने, मोक्ष सुफल ना पाए हैं॥
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा संत महान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥8॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य की महिमा अनुपम, जिनवाणी में गाया है।
अतःप्राप्त करने को वह पद, हमने लक्ष्य बनाया है॥
अष्ट द्रव्य से पूजा ऋषि की, आत्म के कल्याण की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की॥9॥
वन्दे ऋषिवरम्-2

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन-हेतवे-चौरारि-डाकिनी शाकिनी-व्यन्तर-भूतादि पराभव-निवारकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक निर्मल नीर से, देते हैं त्रय धार।
जीवन सुखमय शांत हो, होवे धर्म प्रचार।
।।शान्तये शान्तिधारा।।

परम सुगन्धित पुष्प यह, लेकर अपरम्पार।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने भव से पार॥
।।पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

(मोतियादाम छन्द)

सुर मन्यु ऋषीश्वर गाए, जो ऋद्धी श्रेष्ठ जगाए।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री सुरमन्यु मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मन्यू ऋषी अनगारी, जो हुए ऋद्धि के धारी।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री मन्यु मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर श्री निचय कहाए, जो ऋद्धी शुभ प्रगटाए।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री निचय मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि सर्व सुन्दर कहलाए, जो अतिशय ऋद्धी पाए।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री सर्व सुन्दर मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिवर जयवान कहाए, जो ऋद्धी श्रेष्ठ जगाए।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री जयवान मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विनय लालस अनगारी, पावन ऋद्धी के धारी।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री विनय लालस मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय मित्र महर्षी गाए, अतिशय ऋद्धी प्रगटाए।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं ऋद्धीधारी श्री जयमित्र मुनये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादिक चौबिस जानो, गणधर उनके शुभ मानो।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्दश शत् द्विपञ्चाशत गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये सप्त ऋषी अनगारी, गणधर है ऋद्धीधारी।
हम जिनपद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं सप्त ऋषि एवं सर्वगणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- सप्त ऋषी के चरण की, पूजा है अभिराम।
जयमाला गाते विशद, करके चरण प्रणाम॥

(जोगीरासा छन्द)

ऋषिवर सुरमन्यु की महिमा, जग के प्राणी गाएँ।
श्री मन्यू के चरणों आके, सुर नर अर्घ्य चढ़ाएँ॥
श्री निचय जी अष्ट ऋद्धियाँ, तपधर के प्रगटाएँ।
सर्व सुन्दर के चरण कमल में, सुरनर शीश झुकाएँ॥1॥
श्री जयवान विजय श्री पाके, अपने कर्म नशाते।
विनय लालस के पद वन्दन को, दूर दूर से आते॥
श्री जयमित्र मित्र जन-जन के, जग में करुणाकारी।
सप्त ऋषी के चरण कमल में, सविनय ढोक हमारी॥2॥
नन्दन नृप के पुत्र सभी यह, सप्त ऋषी कहलाए।
धरणी माता रही आपकी, जिनके भाग्य जगाए॥
मुनिसुव्रत का शासन था तब, राम चन्द्र के भाई।
मधु का राज्य जीत शत्रुघन, पाए बहु प्रभुताई॥3॥
आकर के चमरेन्द्र यक्ष ने, महामारी फैलाई।
मथुरा नगरी में विनाश की, मानो ही घड़ि आई॥
पुण्योदय से सप्त ऋषी तब, गगन मार्ग से आये।
भव्य जीव ऋषियों की पूजा, करके हर्ष मनाए॥4॥
महामारी की कृपा से जिनकी, हुई थी पूर्ण सफाई।
प्रबल पुण्य का योग जगा तब, फिर से शुभ घड़ि पाई।
सीता ने ऋद्धीधर ऋषियों, को आहार कराया।
जिनकी पूजा करने का यह, 'विशद' सुअवसर पाया॥5॥

दोहा- करते हैं हम वन्दना, चरणों हे ऋषिराज!
कर्म शृंखला नाशकर, पाएँ शिवपुर राज॥

ॐ ह्रीं सप्तऋद्धि युक्त सप्त मुनये सर्वोपद्रव-विनाशन हेतवे-चौरारि डाकिनी-शाकिनी-व्यंतर-भूतादि-पराभव-निवारकाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा का फल प्राप्त कर, पाएँ शिव सोपान।
सुख शांती सौभाग्य हो, करते हम गुणगान

(इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आरती चौंसठ ऋद्धि

तर्ज- ॐ जय......

ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ, स्वामी चौंसठ ऋद्धि महाँ।
आरति करते हम मुनियों की, होवें जहाँ - जहाँ॥
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
प्रथम आरती बुद्धि ऋद्धिधर, की करने आए।
स्वामी ....
ऋद्धि विक्रिया की करने को, दीप जला लाए।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि
मुनि चारण ऋद्धी धारी के, चरणों सिर नाते।
स्वामी ....
तप ऋद्धीधारी मुनियों के, अतिशय गुण गाते॥
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
बल ऋद्धीधारी मुनियों के, बल का पार नहीं।
स्वामी........
औषधि ऋद्धीधारी मुनिवर, मिलते कहीं-कहीं॥
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
रस ऋद्धीधारी मुनियों की, महिमा शुभकारी।
स्वामी ......
अक्षीण महानश ऋद्धीधारी,मुनिवर अविकारी॥
ॐ जय चौंसठऋद्धि महाँ
ऋद्धीधर मुनियों की आरति, मंगलरूप कही।
स्वामी .....
"विशद' आरती करने वाले, पावें मार्ग सही।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

सर्व आचार्य परमेष्ठी का अर्घ्य

पूर्वाचार्य श्री शांति सागर जी, आदिसागराचार्य प्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर॥
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन विशद मेरा सादर॥
ॐ ह्रूं सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

दोहा- परमेष्ठी को नमन कर, जिनश्रुत को उरधार।
चैत्य जिनालय धर्म को,वन्दन बारम्बार॥

।।चौपाई।।

मध्यलोक के मध्य में जानो, जम्बूद्वीप श्रेष्ठ पहिचानो।
आर्य खण्ड उसमें, सुखदायी, भारत देश रहा शुभ भाई॥
वर्तमान चौबीसी जानो, तीर्थंकर की पदवी मानो।
दिव्य देशना देते भाई, भवि जीवों को हो सुखदाई॥
महिमा अपरम्पार कही है, जग में तारण हार रही है।
ॐकारमय भाई जानो, समोशरण में खिरती मानो॥
गणधर जो भी होते भाई, दिव्य ध्वनि झेलें सुखदाई।
होते हैं वह ऋद्धिधारी, चार ज्ञान के हैं अधिकारी॥
मोक्ष मार्ग के होते नेता, रत्नत्रय के शुभ अभिनेता।
भवि जीवों को राह दिखाते, मोक्षमार्ग पर बढ़ते जाते॥
उनकी भक्ती करने आये, विशद भाव से शीश झुकाए।
हमको मोक्ष मार्ग मिल जाए, उर में ज्ञान कली खिल जाए॥
संवत् बीस सौ चुहत्तर भाई, श्रावण वदि एकम सुखदायी।
दो हजार सत्तरह गाया, वर्षा योग का समय बताया॥
गुरुग्राम हरियाणा पावन, पार्श्वनाथ मंदिर मन भावन।
चौंसठ ऋद्धि विधान शुभकारी, पूर्ण हुआ है अतिशयकारी॥
मिलकर सभी विधान कराओ, भाई अतिशय पुण्य कमाओ।
अपना जीवन सफल बनाओ, अनुक्रम से फिर मुक्ति पाओ॥
अक्षर मात्र की त्रुटि हो कोई, इसमें जो भी पाओ सोई।
ज्ञानी जन सब शोध कराएँ, हमको उसका बोध कराएँ॥
दोहा- अन्तिम है यह भावना, होय कर्म का अन्त।
शिव पथ के राही बनें, पाएँ सौख्य अनन्त ॥

आचार्य श्री का अर्घ्य

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, पालें पञ्चाचार।
परमेष्ठी आचार्य पद, वन्दन बारम्बार॥
ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री ...चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ।
तीर्थंकर चौबीस के, चरण झुकाते माथ॥
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकार।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार॥

॥चौपाई॥

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे॥1॥
देव-शास्त्र -गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी॥2॥
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी॥3॥
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें॥4॥
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी॥5॥
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ॥6॥
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें॥7॥
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी॥8॥
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई॥9॥
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी॥10॥
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें॥11॥
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई॥12॥
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी॥13॥
दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी॥14॥
ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो॥15॥
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ॥16॥
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता॥17॥
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी॥18॥
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें॥19॥

जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें॥20॥
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धी धारी॥21॥
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें॥22॥
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धी हल्की वाली॥23॥
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी॥24॥
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी॥25॥
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए॥26॥
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी॥27॥
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी॥28॥
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे॥29॥
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी॥30॥
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें॥31॥
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें॥32॥
आशीर्विष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी॥33॥
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धी मुनि पावें॥34॥
जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीर्विष ऋषिवर अनगारी॥35॥
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें॥36।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो॥37॥
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें॥38॥
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी॥39॥
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस यह, पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ॥
दुख दारिद्र को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग॥

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः।

पाद प्रच्छालन

बड़े पुण्य से अवसर आया है, गुरुवर का जो दर्शन पाया है।
पाद प्रच्छालन अब कर्मों का गालन, अब करना हैं गुरु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से .....

प. पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैं॥
गुरु आराध्य हम आराधक, करते हैं उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल से आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण पुष्पं निर्व. स्वा.।

काल अनादि से हे गुरुवर! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतू, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥

विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाला॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा॥
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥

हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ती में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत)

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज-इह विधि मंगल आरति कीजे--

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे।टेक॥
पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी॥ नव देवों...
दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता॥ नव देवों...
तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की॥ नव देवों...
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की॥ नव देवों...
पाँचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की॥ नव देवों...
छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की॥ नव देवों...
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की॥ नव देवों...
आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी॥ नव देवों...
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की॥ नव देवों...
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे॥ नव देवों...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

Contact for order
Call and whatsapp
9993602663
7722983010

9993602663

पीतल डिब्बा सेट

4G 3.72KB/s 9:21 VoLTE

Like Share

8

Like Share

10"
11"

MILTON
REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

जैन मन्दिर गली नं. 2 कैलाश नगर
श्रीमती आभा जैन राकेश जैन लोहड़ी वाले कैलाश

WEIGHT g
654.0
STAND BY
STABLE
NET
Essae

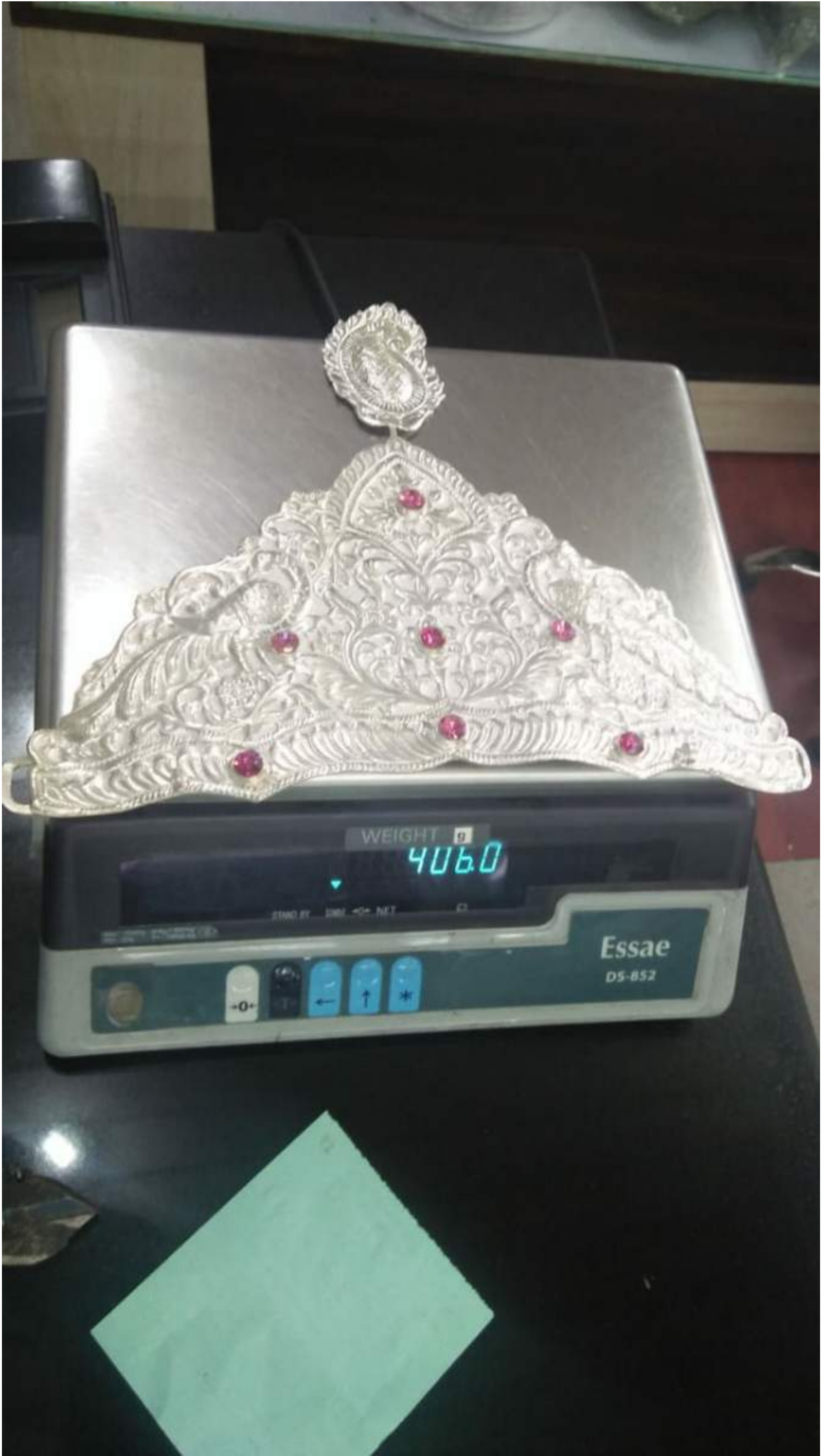
WEIGHT g
406.0
Essae
DS-852

WEIGHT
3450
Essae
DS-852

WEIGHT
42040
Essae
DS-852

PhotoGrid

REDMI NOTE 5 PRO
MI DUAL CAMERA

5/03/03

Gopal Lal Dinesh
Mfg. All Brass
Jain Mandir